१४६. माया के गोरख धंदे

राम रहीमको भूलके सीखे झूठ कपटके फंदे
ये सब माया के गोरख धंदे ॥धृ.॥

इसीलिये कहीं धरती काँपी कहींपे सागर उछला
कहीं पे आँधी तूफाँ कहींपर कहींपे अॅटम गोला
धरतीपर ये पाप जगा है, आदमी हो गये अंधे ॥१॥

कोई अपनी भाषापे लडता, कोई लडे सीमापर
कोई धर्मके नारे लगाता, कोई न माने ईश्वर
जो वो अपने स्वारथ के हित, खोजत रास्ते गंदे ॥२॥

Scanned by CamScanner

संत महात्माके मठ ना छोडे, छोडी न साधूकी कुटिया
अवतारोंके आडमे बैठे, बोलत ग्यानकी बतियाँ
प्रेमही दिलमे सूख गया है, नामके रह गये बंदे ॥३॥

इतनी हालत बिगडी पर नही, साचकी सुधबुध आवे
सेवा प्रीती त्यागका जीवन, मानवको ना सुहावे
अपनाही जब दाम है खोटा, सत्यको काहे नींदे ॥४॥

अब तो जागो भाग जगाने, मेहेर है अवतारे
कर लो सुमिरन जावो शरणमे ,वोही है रखवारे
मधुसूदन यदि अबभी न जाना रह जावोगे बंधे ॥५॥

Scanned by CamScanner